उपकल्पना या प्राक्कल्पना

प्राक्कल्पना या उपकल्पना एक समय के अनुसार अथवा काम चालाऊ सामान्यीकरण निष्कर्ष है जो सही नहीं है बल्कि उसके बारे में अभी सत्यता की परीक्षा बाकी है। दूसरे शब्दों में, लक्ष्य तक पहुँचने के पहले मन-मन बना लिया गया विचार ही प्राक्कल्पना है। यह किसी भी प्रकार का अनुमान कल्पनात्मक विचार सहज ज्ञान था और कुछ भी हो सकता है जोकि अनुसन्धान का आधार बन जाता है। इस प्रकार यह एक ऐसा पूर्वानुमान है जो किसी भी सामाजिक घटना के विषय में खोज करने की प्रेरणा देता है।

सामाजिक अनुसन्धान में प्राक्कल्पना का निर्माण वैज्ञानिक अध्ययन का **प्रथम चरण** माना जाता है। उपकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार होता है जो शोधकर्ता किसी भी विषय के सम्बन्ध में अपने प्रारम्भिक ज्ञान एवं सामान्य अनुभव पर बनाता है। अनुसन्धानकर्ता का यही पूर्व विचार उसका ध्यान अनावश्यक तथ्यों से हटाकर आवश्यक व निश्चित तथ्यों पर केन्द्रित करके अनुसन्धान को दिशा प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, उपकल्पना का निर्माण अनुसन्धानकर्ता को अपने अध्ययन विषय से भटकाव को रोकता है तथा अनुसन्धान को निश्चिता प्रदान करता है, इसीलिए कहा जाता है कि *उपकल्पना के बिना सामाजिक अनुसन्धान में हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते।*

उपकल्पना की परिभाषाएँ

- **जॉर्ज कैसवेल** के अनुसार, ''उपकल्पना अध्ययन विषय से सम्बद्ध अस्थायी तथा काल्पनिक निष्कर्ष है।''
- **गुडे एवं हाट** के अनुसार, ''उपकल्पना भविष्य की ओर देखती है। यह एक तर्कपूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सत्य भी हो सकती है और असत्य भी।''
- **बोगार्ड्स** के अनुसार, ''एक उपकल्पना एक प्रस्थापना है जिसका परीक्षण किया जाना है।''
- **पीटर एच मन्त्र** के अनुसार, ''उपकल्पना एक कामचलाऊ अनुमान है।''
- **पी वी यंग** के अनुसार, ''एक कार्यवाहक विचार जो उपयोगी खोज का आधार बनता है कार्यवाहक उपकल्पना माना जाता है।''

उपकल्पना की विशेषताएँ

1. उपकल्पना अनुसन्धान कार्य को निश्चितता प्रदान करती है।
2. यह अनुसन्धान को सही दिशा प्रदान करती है।
3. यह अध्ययन की सीमा को निर्धारित करती है।
4. यह सिद्धान्तों के निर्माण व विकास में सहायक होती है।
5. उपकल्पना अवधारणात्मक रूप से स्पष्ट होनी चाहिए।
6. उपकल्पना अनुभवसिद्ध होनी चाहिए, जिससे इसकी सत्यता की जाँच हो सके।
7. उपकल्पना विशिष्ट होनी चाहिए।
8. उपकल्पनाएँ सरल होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

9. उपकल्पना तर्कपूर्ण होनी चाहिए। जैसे—दुर्खीम ने आत्महत्या के लिए उपकल्पनाएँ बनाई थीं।

10. उपकल्पना सिद्धान्त समूह से सम्बद्ध होनी चाहिए।

उपकल्पनाओं के प्रकार

- **डॉ. सुरेन्द्र सिंह** ने उपकल्पनाओं को दो भागों में बाँटा है
- **तात्विक उपकल्पना** इसमें दो या अधिक चरों के बीच में अनुमान पर आधारित सम्बन्धों को व्यक्त किया जाता है, यह परीक्षणीय नहीं होती है।
- **सांख्यिकी उपकल्पना** तात्विक उपकल्पना के सम्बन्धों से निगमित सांख्यिकी सम्बन्धों का एक अनुमान पर आधार कथन होता है, इसके परीक्षण के लिए किसी-किसी आधार का होना आवश्यक है।
- **हैज** के अनुसार, वर्गीकरण में दो स्वरूपों का वर्णन किया गया
  (i) सरल उपकल्पना (ii) जटिल उपकल्पना
- इसी तरह **गुडे** एवं **हाट** ने तीन प्रकार की उपकल्पनाओं का उल्लेख किया है
  (i) अनुभवात्मक समानताओं से सम्बन्धित
  (ii) जटिल, आदर्श प्रारूपों से सम्बन्धित
  (iii) विश्लेषणात्मक चरों से सम्बन्धित
- **उपकल्पना के स्रोत** गुडे एवं हाट ने निम्नलिखित स्रोत बताए हैं
  (i) सामान्य संस्कृति (ii) वैज्ञानिक सिद्धान्त
  (iii) समरूपताएँ या सादृश्यताएँ (iv) व्यक्तिगत अनुभव
- **ए वुल्फ** ने कहा है "सादृश्यता उपकल्पनाओं के निर्माण तथा घटना में किसी कामचलाऊ नियम की खोज के लिए अत्यन्त उपयोगी पथ-प्रदर्शन है।

वैसे देखा जाए तो उपकल्पना के मुख्यत: दो स्रोत हैं
(i) व्यक्तिगत स्रोत (ii) बाह्य स्रोत

उपकल्पना की सीमाएँ

(i) उपकल्पना को ध्रुव सत्य नहीं मानना चाहिए।
(ii) तथ्य संकलन में सीमितता
(iii) पक्षपात की सम्भावना

वेस्तावे की इस उक्ति को सदैव ध्यान में रखकर उपकल्पना का निर्माण करना चाहिए "प्राक् कल्पनाएँ वे लोरियाँ हैं जो असावधान को गाना गाकर सुला देती हैं।"

उपकल्पना का महत्त्व या उपयोगिता

(i) अनुसन्धान की दिशा निश्चित करना
(ii) अनुसन्धान का उद्देश्य स्पष्ट करना
(iii) अध्ययन क्षेत्र को सीमित करने में उपयोगी
(iv) अध्ययन में निश्चितता लाना
(v) उपयोगी तथ्यों के संकलन में सहायक
(vi) निष्कर्ष निकालने में उपयोगी
(vii) सिद्धान्तों के निर्माण में सहायक

Scanned with CamScanner

निदर्शन या प्रतिदर्श (Sampling)

सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन पद्धति का अत्यधिक महत्त्व है। यदि किसी समाज या समूह का अध्ययन करने के लिए हम कुछ इकाइयों का चयन करते हैं। जिसमें समाज व समूह के गुणों का प्रतिनिधित्व हो तो इसे हम निदर्शन पद्धति कहते हैं।

सामाजिक अनुसन्धान में मुख्य रूप से दो विधियों को अपनाया जाता है एक को **जनगणना पद्धति** तो दूसरे को **निदर्शन पद्धति** कहा जाता है। जनगणना पद्धति में हम प्रत्येक इकाई से सम्पर्क स्थापित करते हैं। इसके विपरीत पूरे समूह से कुछ इकाइयों को चुनते हैं तो चुनी हुई इकाइयों को ही निदर्शन कहते हैं। यदि निदर्शन पूरे समूह के लक्षणों का प्रतिनिधित्व नहीं करता तो प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय नहीं होते इसीलिए कहा गया है कि निदर्शन के अन्दर सभी गुणों का प्रतिनिधित्व होना आवश्यक है इसको अनेक विद्वानों द्वारा परिभाषित किया गया है।

निदर्शन की परिभाषाएँ

- **गुडे** एवं **हाट** ने कहा है कि ''एक निदर्शन सम्पूर्ण समूह का न्यूनतम प्रतिनिधि है।''
- **यंग** के अनुसार, ''एक सांख्यिकीय निदर्शन उस सम्पूर्ण समूह या योग का अति लघु चित्र है जिसमें से कि निदर्शन लिया गया है।''
- **फेयर चाइल्ड** के अनुसार, ''निदर्शन वह प्रक्रिया पद्धति है जिसके द्वारा एक विशिष्ट समय में से निश्चित संख्या में व्यक्तियों, विषयों अथवा निरीक्षणों को निकाला जाता है।''
- **बोगार्ड्स** के अनुसार, ''निदर्शन एक पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार इकाइयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत का चयन है।''
- **सिनपाओ पेंग** के अनुसार, ''एक सांख्यिकीय निदर्शन सम्पूर्ण समूह का प्रतिनिधिक अंश है।''
- **फ्रैंक** के शब्दों में ''निदर्शन शब्द का प्रयोग केवल किसी समग्र चीज की इकाइयों के एक सेट या भाग के लिए किया जाना चाहिए जिसे इस विश्वास के साथ चुना गया है कि वह समग्र का प्रतिनिधित्व करेगा।''

उपरोक्त परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि निदर्शन किसी विशाल समूह का वह भाग है जो उस सम्पूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व करता है इससे स्पष्ट होता है कि हम चुनी हुई इकाइयों के आधार पर सम्पूर्ण के बारे में निष्कर्ष निकाल सकते हैं इस प्रकार निदर्शन समग्र से जुड़ी हुई वह इकाई होती है जो प्रत्येक दृष्टि से सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करती है।

निदर्शन की विशेषताएँ

सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन पद्धति द्वारा विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन सरल व सुविधाजनक ढंग से हो सकता है। इसमें सम्पूर्ण के अध्ययन के लिए उसकी समस्त इकाइयों का अध्ययन नहीं किया जाता बल्कि उन इकाइयों को अध्ययन के लिए चुना जाता है जिसमें सम्पूर्ण के सभी लक्षण विद्यमान हों। इसीलिए इस प्रणाली के उपयोग से समय, धन तथा अनुसन्धानकर्ता अनावश्यक परिश्रम से छुटकारा पा सकता है

1. प्रतिनिधि इकाइयों का अध्ययन
2. विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन
3. प्राप्त सूचनाओं का निरीक्षण व पुन:परीक्षण
4. निर्वाचित इकाइयों का वृहद् अध्ययन
5. सूचनाओं की प्राप्ति में सुविधा

Scanned with CamScanner

निदर्शन के प्रकार

निदर्शन के चयन में समस्याओं के अनुरूप अनेक प्रणालियाँ प्रचलित हैं। प्रत्येक प्रणाली की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। *इसकी मुख्यत: चार प्रणालियाँ हैं*

(i) दैव निदर्शन (ii) स्तरित निदर्शन
(iii) उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (iv) अन्य

इसके अलावा सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन की अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जिन्हें हम **दो प्रमुख श्रेणियों** में विभाजित करते हैं

सम्भावित निदर्शन के ही अन्तर्गत दैव निदर्शन आता है इसके अतिरिक्त इसके अन्तर्गत, लाटरी पद्धति, ग्रिड पद्धति, दैव संख्या सारणी पद्धति आदि आते हैं। इसी प्रकार दैव निदर्शन पद्धति का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है जिसमें सरल दैव निदर्शन, स्तरीकृत दैव निदर्शन, क्षेत्रीय या गुच्छ निदर्शन, द्विश: या पुनरावृत्ति निदर्शन एवं क्रमबद्ध निदर्शन आते हैं।

असम्भावित निदर्शन पद्धति के अन्तर्गत भी अनेक पद्धतियाँ आती हैं;

जैसे—अभ्यंश या कोटा निदर्शन, उद्देश्यपूर्ण निदर्शन एवं आकस्मिक निदर्शन आते हैं।

निदर्शन के गुण

(i) समय की बचत
(ii) धन की बचत
(iii) परिश्रम की बचत
(iv) अधिक गहन अध्ययन की सम्भावना
(v) निष्कर्षों की परिशुद्धता
(vi) प्रशासनिक सुविधा

जैसे—अनुसन्धान क्षेत्र प्राय: बड़ा होता है और जिसमें प्रत्येक सूचनादाता के पास पहुँचना सम्भव नहीं होता तथा सूचनादाता की अनिच्छा से बचा जा सकता है।

निदर्शन के दोष

(i) अभिरुचि की समस्या
(ii) प्रतिनिधित्व का सही रूप में चयन न हो पाना
(iii) विशेष ज्ञान की आवश्यकता
(iv) पक्षपात की सम्भावना

निदर्शन प्रणाली में उपरोक्त दोषों के बावजूद इसमें असंख्य अच्छाइयाँ हैं क्योंकि इसमें समग्र में से कुछ चुनी हुई इकाइयों का अध्ययन करते हैं तत्पश्चात् जो निष्कर्ष निकालते हैं वह सार्वभौमिक रूप से सबके लिए मान्य होता है साथ-साथ यह समय, धन तथा परिश्रम की बचत करता है।

Scanned with CamScanner